THE RICH CULTURAL PAST OF INDIA : CONCERNS AND DEMYSTIFICATION OF REALITIES

भारत का समृद्ध सांस्कृतिक अतीत : चिंताएँ एवं वास्तविकताओं का रहस्योद्घाटन

National Seminar

on

The Rich Cultural Past of India : Concerns and Demystification of Realities

19-20 August, 2023

Organized By:

Department of Sociology,
Sardar Bhagat Singh Govt. P.G. College
Rudrapur (U.S.Nagar), Uttarakhand.
(Affiliated to Kumaun University, Nainital)

Sponsored By:

Indian Council of
Social Science Research

Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi.

VIVEK
PRAKASHAN

Dr. Anchalesh Kumar

19

भारतीय संस्कृति में निहित सौन्दर्य का स्वरूप

*डॉ0 रूमा साह **

हमारा यह सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण सृष्टि सौन्दर्य पर ही कायम है। यदि यहाँ सौन्दर्य नहीं होता तो भला कौन इस जीवन को जीना चाहता। आज मनुष्य अपना जीवन निर्वाह कर रहा है तो कल की उम्मीद पर कि शायद कल उसके जीवन में कोई खुशी, कोई आनन्द की अजस्र धारा प्रवाहित हो और ये खुशी, ये आनन्द सौन्दर्य का ही दूसरा नाम है।क्योंकि जो वस्तु हमें आनन्द प्रदान करेगी, वह निश्चित ही हमारे लिये अति सुन्दर होगी। सुन्दर शब्द का तात्पर्य क्या है–''सु अर्थात सुष्ठु या अच्छी प्रकार, 'उन्द्र' अर्थात् आर्द्र करना और 'अरन्' कर्त्तृवाचक प्रत्यय के द्वारा व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ हुआ–अच्छी प्रकार या भली–भाँति आर्द्र (सरस) करने वाला''(1) अर्थात् सुन्दर वही है जो हमें रसानुभूति से सराबोर कर दे। जिस प्रकार कैंची कागज या कपड़े को जितनी तीव्रता से काट देती है उतनी ही तीव्रता से हमें प्रभावित कर देने वाला तत्व सुन्दर कहलाता है। सुन्दर का पान करने में हमारे चक्षु भी कैंची का काम करते है।

डॉ0 रमाशंकर द्विवेदी जी के अनुसार ''असल में व्यक्ति और वस्तु, दृष्टि और दृश्य के सम्मिलन से ही सौन्दर्य का उदय होता है।''(2) कोई वस्तु सुन्दर लगती है या असुन्दर यह वस्तु में नही अपितु व्यक्ति की मनःस्थिति पर निर्भर करता है। श्री कृष्ण जी के वियोग में तड़पती गोपिकाओं की अपार विरह–वेदना इसका जीता–जागता प्रमाण है। कान्हा के वियोग में उन्हें वो लताऐं जो असीम शक्ति प्रदान करती थी, अब ज्वाला के समान हो गयी है–तब ये लता लगति अति शीतल, अब भयी विषम ज्वाल की पुंजें।

डॉ0 हरद्वारी लालशर्मा ने व्यक्त किया है–''सौन्दर्यशास्त्र सौन्दर्य की शास्त्रीय विवेचना है''(3) भारतीय संस्कृति में सौन्दर्य को रमणीय, शोभा, कान्ति, लालित्य, लावण्य, मनोरम, रूचिर, चारू, कान्त, ललित आदि पर्यायों से ऑकलन किया जा सकता है। तथा सौन्दर्य शात्रियों ने सौन्दर्य विषयक शब्दों जैसे सुषमा, लावण्य, रम्य, रमणीय, शोभा, शोभन, श्रीकान्त, कमनीय, ललित, ललाम, मंजु, मंजुल, मनोहर, माधुर्य, दिव्य, रूचिर, सुभग, अभिराम, आदि का बहुतायत में प्रयोग किया है।

''सुन्दर रूचिरं चारू सुषमं चारूशोभनम्।
कान्तं मनोरम रूच्यं मनोज्ञं मंजु मंजुलम्।। (4)

कवि माघ के अनुसार–''रमणीयता वह है जिसे क्षण–क्षण के बाद देखने की इच्छा हो और वह प्रतिक्षण सर्वथा नई प्रतीत हो–क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।''(5) रामायण तथा महाभारत में सुन्दर को प्रिय–दर्शन भी कहा गया है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन आचार्यों ने सौन्दर्य को सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् कहते हुए काव्य निर्माण की बुनियाद मान रमणीयता तथा आनन्द को सौन्दर्य की शाखाएँ माना है।

.....

** असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड, मोबाईल नं0-8474937743.*

तथा सौन्दर्य सृजन में मानवीय रूचि को मान्यता देते हुए कल्पना, भावना, स्मृति, अनुभवों के द्वारा सौन्दर्य को सदा जीवित रखा है। भारत की विविध कलाओं जैसे नृत्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, पाककला, लोक संस्कृति आदि में भारतीय संस्कृति के समन्वित रूप के द्वारा सौन्दर्य के अनेकानेक रूपों में दर्शन होते हैं। मनुष्य के चहुँमुखी बौद्धिक, भौतिक, भावनात्मक, शारीरिक, आध्यात्मिक, नैतिक विकास हेतु सौन्दर्य से युक्त परिवेश अनिवार्य है और ऐसे सुखमय वातावरण का निर्माण होता है एक सौन्दर्य संस्कृति के द्वारा। भारत विविध संस्कृति वाला देश है इसकी भाषा–बोली, रहन–सहन, वस्त्राभूषण, कला–कौशल, आचार–विचार सब कुछ भिन्न होते हुऐ भी एकता रूपी माला में आच्छादित है। प्राचीनतम् संस्कृतियों में एक भारतीय संस्कृति अपने विशाल कलवर में अनेकानेक प्रकार के सौन्दर्य आदर्शों व जीवन मूल्यों का निर्धारण करती गद्य, भाषा, राग, लय, तान द्वारा हमें मंत्रमुग्ध कर देती है।

भारतीय संस्कृति में सौन्दर्य का वर्गीकरण–

1. प्राकृतिक सौन्दर्य
2. मानवीय सौन्दर्य
3. दैवीय सौन्दर्य
4. बाल सौन्दर्य
5. भावगत सौन्दर्य
6. कल्पनागत सौन्दर्य
7. प्रतीक सौन्दर्य
8. बिम्ब सौन्दर्य
9. अंलकार सौन्दर्य
10. भाषागत सौन्दर्य

1.प्राकृतिक सौन्दर्य–प्रकृति हमेशा से ही मानव की चिर–सहचरी रही है। अपने सौन्दर्य द्वारा उत्तम काव्य कृति का माध्यम बनी है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति अपने कोमल, ककर्श, शान्त, भयावह आदि रूपों में चित्रित होती कवियों की काव्य रचना का मुख्य केन्द्र बन बैठी है। मानव प्रकृति पर आश्रित है तो प्रकृति भी मनुष्य की चिरसंगिनी बन उसे काव्य सौन्दर्य की प्रेरणा प्रदान करती है। रम्य रूप में प्रकृति का दृश्य बिम्ब प्रस्तुत है।

"गिरि महेन्द्र पर आश्रम शान्त,
रम्य प्रकृति का सुन्दर प्रान्त।
सर सरिता वन महिधर श्रृंग
सौरभ सुमन लावलि भृंग।" (6)

हमारी भारतीय संस्कृति के प्राणतत्व, भगवान श्री कृष्ण जी की बाँसुरी धुन पर चहचहाती चिड़ियाँ, भौरों के गुनगुनाने, कोयल का गायन, घटाओं के गरजने, पानी की लहरों का उफान इस प्रकार है–

"चहचहा रही रात में चिड़ियाँ,
फड़फडा रहे कुंज निकंज में मोर पंख (7)
गुनगुना रहे भौरें पराग–विह्वल प्रसून पर।।

बसंत ऋतु के सौन्दर्य की तुलना कवि क्रमशः राजस्थानी बाला से करता है।

"अलबेली बसन्त ऋतु मानो कोई सुन्दर बाला
गेहूँ की बालावलि थिरकी फूलों का उजियारा" (8)

2. **मानवीय सौन्दर्य**–मानव सौन्दर्य ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि में से एक है। ये मानव–सौन्दर्य भू–मण्डल पर यत्र–तत्र विद्यमान है भारतीय संस्कृति में तो कविगणों के लिये ये सौन्दर्य हमेशा से ही काव्य सृजन का स्रोत रहा है। कहा भी गया है–"नहिं मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्। (9) मनुष्य से श्रेष्ठ कोई नहीं है। मानवीय सौन्दर्य के अन्तर्गत विभिन्न चरित्रों के अन्तःसौन्दर्य व बाह्य सौन्दर्य की झलक काव्य में दृष्टिगोचर होती है। गोपबालकों, गाय–बछड़ो तथा सखाओं के मध्य बंशी बजाते श्री कृष्ण भगवान् जी की अनुपम छवि देखिये–

"सखन मध्य मोहन छवि छावत।
हटकत गेयन, वेणु बजावत।।" (10)

मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम ने मनुष्य की श्रेणी में आकर रावण जैसे दुराचारी को भी इतिहास पुरूष व श्रेष्ठ बताकर अपने विशाल हृदय व महानता का परिचय देते हुए उसके अन्तःसौन्दर्य को उजागर किया–

रावण से बड़ा इतिहास–पुरूष कोई था
लक्ष्मण इतना अप्रितम वर्चस्व
अगाध पाण्डितय
तपस्या से अर्जित परात्पर शक्तियाँ
और निरंकुश व्यक्तित्व।।(11)

शैशवावस्था से यौवनावस्था में कदम रखते श्रृंगी ऋृषि का बाह्य सौन्दर्य प्रस्तुत है।

"गोरे तन में फूट रही थी नव आभा अवदान।
मानो अगणित मणियों की छवि से हो वह प्रतिभात।।" (12)

3. **दैवीय सौन्दर्य**–दैवीय सौन्दर्य के अन्तर्गत लौकिक से परे अलौकिक यानि दिव्य सौन्दर्य का चित्रण किया जाता है। एक भक्त हृदय अपने आराध्य अपने ईष्ट की सुन्दरता पर सर्वस्व न्यौछावर करता हुआ भी सन्तुष्टि को प्राप्त नहीं होता। फिर वह चाहे प्राचीन सूर, तुलसी, मीरा जी हो या फिर अर्वाचीन कवि, उनके जन–जन को आकर्षित करने वाले श्रीराम व गोपियों के आराध्य श्रीकृष्ण जी का सौन्दर्य दर्शनीय ही नहीं अपितु श्रद्धेय व भक्तिपूर्ण भी है। कवि श्री राधा कृष्ण जी की अनुपम झॉकी के दर्शन करता हमारी भारतीय संस्कृति के मान–सम्मान व उसकी सुन्दरता में चार–चाँद लगा देता है।

"सजल जलद छवि श्याम शरीरा, शोभित तड़ित–कान्ति कीट चीर
कंध–वक्ष, युग बाहु विशाला, हृदय पदिक, सर्वागत माला।।" (13)

जगत् में मानव, पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि में सौन्दर्य का प्रसार करने वाले ईश्वर की आभामय कान्ति का हम सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

4. **बाल सौन्दर्य**–इसके अन्तर्गत बालक के अंग–प्रव्यंग का वर्णन, जिसमें कि उसके शरीर, मुख–चिबुक, केश अधर, नयन, दन्त, नासिका, वस्त्राभूषण आदि का अत्यंत मनोहारी वर्णन होता है। इसी संदर्भ में बल्लभ के नन्दन विट्ठल का सुखदायी रूप निम्नवत् है–

"अद्भुत रूप की महिमा कौन बरनै कवि ऐसौ हो।
छोटे चरन जाकी छोटी अँगुरिया नरव मनिचन्द बिराजै हो।
जंधा कदली की अति शोभा, तापर गुल्फ विराजै हो।
कटि पर छुद्र घंटिका राजित के हरि शोभा लाजै हो।। (14)

5. **भावगत सौन्दर्य**–भाव काव्यसर्जना का मुख्याधार माना जाता रहा है। काव्य निर्माण हेतु कवि को भाव–विचार कल्पना की सीढियों से गुजरना पड़ता है। इनमें भी सर्वप्रथम भाव जन्म लेना है तत्पश्चात् विचार व कल्पना का उदय होता है। ये भाव प्रेम, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, गर्व, आशा, उत्सुकता, शोक, क्रोध, भय, घृणा लज्जा, निराशा, उग्रता कई प्रकार के हो सकते हैं। और संस्कृति ही क्या अपितु दुनिया के आदि और अन्त तक ये भाव मानव–मन में हिलोरें लेते रहेंगें।क्या गुरू, क्या कवि, क्या ईश्वर सभी के प्रति कवि हृदय का श्रद्धा व भक्तिभाव सभी धर्मों के प्रति उसका आदरभाव स्वयमेव ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुतकरता कवि कह उठता है–

"रूको। किसी के पूजास्थल में
वह अपरिचिता आहट क्या है।
जबकी लक्ष्य है एक सभी का,
फिर पथ की टकराहट क्या है।" (15)

6. **कल्पनागत सौन्दर्य–** कल्पना के माध्यम से अनदेखी, अनसुनी, अमूर्त वस्तुओं के चित्र या अक्ष मानव मस्तिष्क में निर्मित हो जाते है। तथा उसके उपरान्त उन वस्तुओं को साकार रूप प्रदान कर काव्य में प्रस्तुत कर दिया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी व्यक्त करते है "जिस प्रकार भक्ति के लिये उपासना या ध्यान की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार भावों के प्रवर्तन के लिए भावना या कल्पना की आवश्यकता होती है।' (16) चन्द्राकर के काव्य में कल्पना का सौन्दर्य दर्शनीय है। वे कल्पना को प्रेम की आधारशिला बताते हुए कहते है कि यदि प्रमी–प्रेमियों के हृदय में कल्पना के भाव नहीं उठते तो उनके प्रणय का सहारा ही क्या रहता ?

"हृदय में बसती न आकर कल्पना,
प्रेम के आयत गगन के शून्य में,
प्रेमियों को और क्या अवलम्ब था।।" (17)

इनके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति में स्त्री–पुरूष सौन्दर्य कलागत सौन्दर्य, अनुभूमिगत सौन्दर्य, अभि व्यक्तिगत सौन्दर्य, भाषागत सौन्दर्य, प्रतीक–बिम्ब अलंकार सौन्दर्य, अप्रस्तुत योजना आदि विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है। भारत की विभिन्न कलाओं जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला, लोक संस्कृति आदि की खूबसूरती भी साहित्य में समर्थपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होती है। हमारी भारतीय संस्कृति की महानता उसकी पवित्रता तो 'वसुधैव कुटुंबकम् की भावना में निहित है। इसमें विभिन्न परंपराओं व मान्यताओं के मेल के साथ नवीनता का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है। आज जरूरत है अपनी संस्कृति की सुन्दरता व सांस्कृतिक धरोहरों को संवारने व संभालने की।

सन्दर्भ

1)आधुनिक हिन्दी काव्य में रूप वर्णन, डॉ0 राम शिरोमणि होरिल, पृ0–17
2) साहित्य और सौन्दर्य बोध, डॉ0 रमाशंकर द्विवेदी, पृ0–122
3) सौन्दर्य शास्त्र और आधुनिक हिन्दी कविता, प्रेमलता बाफना, पृ0–02
4) अमरकोष, 03,01,53
5) सौन्दर्य दृष्टि, डॉ ओमप्रकाश भारद्वाज, पृ0–13
6) कर्ण, श्री बैजनाथ प्रसादु शुक्ल भव्य, पृ0–12
7) कृष्णाम्बरी, श्री पोद्रदार रामावतार अरूण, पृ0 1–2
8) मानवेन्द्र, श्री रघुवीर शरण मित्र , पृ0–88
9) मंझन का सौन्दर्य दर्शन, डॉ लालता प्रसाद सक्सेना, पृ0–37
10) प्रवाद पर्व, श्री नरेशमेहता, पृ0–44
11) कृष्णायन, द्वारका प्रसाद मिश्र पृ0–50
12) त्रारकवध, श्री गिरिजा दत्त शुक्ल गिरीश, पृ0–97
13) कृष्णायन, श्री द्वारका प्रसाद मिश्र, पृ0–27
14) परमानन्द की सौन्दर्य चेतना निशाशर्मा पृ0 46
15) धरती से पृथ्वी, डॉ0 पार्थ सारथि डबराल, पृ0–9
16) काव्य में सौन्दर्य और उदात्त तत्व, शिवबालक राय, पृ0 24–25
17) अनंग, चन्द्राकर पृ0–25